# अंतरराष्ट्रीय राजनीति का विकास

## "चार महान बहस“

Presented by~Dr. Bharti Son

- स्वायत्त विषय के रूप में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)के बाद उभरा।

- इसके पीछे प्रेरणा स्त्रोत शांति स्थापित करने के तरीकों की खोज करना था।

- राजनीति का एक स्वायत्त विषय के रूप में आरम्भ 1919 में वेल्स विश्वविद्यालय, एबरिक्टविथ, ग्रेट ब्रिटेन (U.K.) में हुआ।

- इस विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विभाग (L.P. Department) के वुडरो विल्सन चेयर प्रथम आचार्य अलफ्रेड जिर्मन थे, जो इतिहासकार थे।

- इस अनुशासन का केन्द्रीय विषय राज्यों के संबंधों का अध्ययन करना था।

- राज्यों के संबंधों को मुख्यतः पारम्परिक रूप से सामरिक, सैनिक और कूटनीतिक / राजनयिक दृष्टि से समझा गया।

- हालाँकि समय के साथ अनुशासन (विषय) की प्रकृति और अध्ययन के मुख्य केन्द्रित विषय में बदलाव आया।विषय की प्रकृति के सन्दर्भ में चार महान बहस हैं।

## 1.उदार अन्तर्राष्ट्रीयवाद (आदर्शवाद) बनाम् यथार्थवाद (Liberal Internationalism V/s Realism):-

• पहली बहस उदार अन्तर्राष्ट्रीय वाद और यथार्थवाद के मध्य 1930 और 1950 के दशक के बीच हुई।

• उदार अन्तर्राष्ट्रीवादियों ने शांति और सहयोग पर बल दिया वहीं यथार्थवादियों ने शक्ति की राजनीति पर बल दिया।

• 1950 के दशक तक यथार्थवादियों ने विषय पर प्रभुत्व कायम कर लिया।

## 2. दूसरी बनाम व्यवहारवाद (Traditionalism V/s Behaviouralism):-

• दूसरी महान बहस 1960 के दशक में परम्परावादियों व व्यवहारवादियों के मध्य हुई।

• जिसका मुख्य मुद्दा था कि क्या अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के कानून विकसित करना संभव है? इस बात का विश्लेषण करना।

## 3.यथार्थवाद तथा उदारवाद बनाम मार्क्सवाद (Realism & Liberalism V/s Marxism)-

• तीसरी महान बहस 1970 और 1980 के दशक में हुई, जिसे "अंतर-प्रतिमान बहस" भी कहा जाता है।

•यह बहस यथार्थवाद उदारवाद तथा मार्क्सवादियों के मध्य हुई। (Between Realist and Liberals on the one Hand and Marxism the Other Hand)एक तरफ उदारवादी व यथार्थवादी थे तथा दूसरी तरफ मार्क्सवादी।

•जिन्होंने आर्थिक संदर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की व्याख्या की।

## 4. प्रत्यक्षवाद बनाम उत्तर-प्रत्यक्षवाद (Positivism v/s Post-Postitivism) –

•चौथी महान् बहस प्रत्यक्षवादियों व उत्तर प्रत्यक्षवादियों के मध्य 1980 के अंत में सिद्धान्तों व वास्तविकताओं को लेकर हुई।

•इसने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के भीतर सामाजिक रचनावाद, आलोचनात्मक सिद्धान्त, उत्तर-संरचनावाद, नारीवाद और हरित राजनीति (Green Politics) जैसे नये दृष्टिकोणों के बढ़ते प्रभाव को प्रतिबिंबित किया।

# THANKYOU